पाठ–22

महापुरुषों का बचपन

5N44KR

— लेखक मंडल

हमारे जीवन में बचपन सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। इसी समय भविष्य की नींव पड़ती है। महान लोगों के बचपन में घटी घटनाएँ प्रेरणा का काम करती हैं। ऐसी घटनाएँ बड़ी स्वाभाविकता से बालमन को सही दिशा में ले जाने में अपनी भूमिका निभाती हैं।

इस पाठ में हम सीखेंगे – पढ़कर अर्थ ग्रहण करना, विभक्ति चिह्न, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग, स्त्रीलिंग और पुल्लिग शब्द।

पहला प्रसंग

शाहजी अपने आश्रयदाता, बीजापुर के सुल्तान के दरबार में जाने की तैयारी कर रहे थे। उनके मन में विचार आया, क्यों न शिवा को भी आज अपने साथ ले चलूँ? आखिर उसे भी तो एक–न–एक दिन इसी दरबार में नौकरी करनी है। दरबार के नियम–कायदों का ज्ञान भी उसे होगा। उन्होंने आवाज लगाई– ''शिवा! तुझे भी आज मेरे साथ दरबार में चलना है। जल्दी तैयार हो जा।''

पिता के आज्ञाकारी पुत्र ने आदेश सुना। वह तुरंत तैयार हो गया। पिता–पुत्र दोनों दरबार में पहुँचे। शाहजी ने सुल्तान के सामने झुककर तीन बार कोर्निश की। फिर वे अपने पुत्र की ओर मुड़कर बोले, ''बेटे ! ये सुल्तान हैं, हमारे अन्नदाता हैं, इन्हें प्रणाम करो।'' लेकिन निडर बालक ने कहा, ''पिता जी! मेरी पूजनीय तो मेरी माँ भवानी हैं। मैं तो उन्हीं को प्रणाम करता हूँ।''

पिता ने पुत्र की ओर आँखें तरेरकर देखा, फिर सुल्तान को संबोधित करते हुए बहुत विनम्र स्वर में कहा, ''हुजूर! यह अभी बच्चा है। दरबार के तौर–तरीके नहीं जानता। इसे माफ कर दीजिए।''

शिक्षण–संकेत– बच्चों से 'पूत के पाँव पालने में' लोकोक्ति का अर्थ पूछें। इसका अर्थ समझाएँ और बताएँ कि महापुरुषों का चरित्र उनके बचपन से ही आभासित होने लगता है। भगतसिंह, आजाद, गोपालकृष्ण गोखले, चंद्रगुप्त मौर्य जैसे महापुरुषों के बचपन की घटनाएँ सुनाएँ और बताएँ कि शिवाजी, गांधी, तिलक की महानता उनके बचपन से ही प्रकट होने लगी थी। शिक्षक प्रेरक प्रसंग सुनाएँ, समूह में पढ़ने के लिए कहें तथा घटनाओं पर चर्चा करें।

घर लौटकर जब पिता ने अपने पुत्र को उसके व्यवहार के लिए डाँटा तो उसने फिर कहा, ''पिता जी, माता–पिता, गुरु और माँ भवानी के अलावा यह सिर और किसी के आगे नहीं झुक सकता।'' निडर बालक की बात सुनकर पिता जी सन्न रह गए।

दूसरा प्रसंग

स्कूल में कक्षाएँ लग रही थीं। निरीक्षण के लिए शिक्षा विभाग के निरीक्षक आनेवाले थे। नियत समय पर वे आए। एक कक्षा में विद्यार्थियों को उन्होंने पाँच शब्द लिखने को दिए। उनमें से एक शब्द था 'कैटल' (KETTLE)। मोहन ने यह शब्द गलत लिखा। अध्यापक ने अपने बूट से ठोकर देकर इशारा किया कि आगे बैठे लड़के की स्लेट देखकर शब्द ठीक कर ले। मोहन ने नकल नहीं की। वह तो सोचता था कि परीक्षा में अध्यापक इसलिए होते हैं कि कोई लड़का नकल न कर सके। मोहन को छोड़कर सब लड़कों के पाँचों शब्द सही निकले। उस पर अध्यापक भी नाराज हुए लेकिन उसने दूसरों की नकल करना कभी न सीखा।

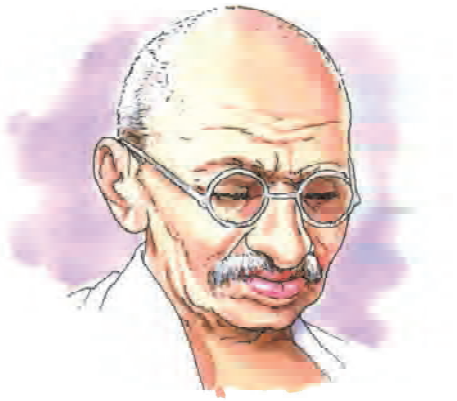

तीसरा प्रसंग

विद्यालय लगा था, लेकिन एक कक्षा में कोई शिक्षक नहीं थे। उस कक्षा के कुछ विद्यार्थी बाहर टहल रहे थे, कुछ कक्षा में बैठे मूँगफली खा रहे थे। वे मूँगफली के छिलके वहीं कक्षा में फेंक रहे थे। शिक्षक कक्षा में आए और कक्षा में मूँगफली के छिलके बिखरे देखकर बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने पूछा, ''कक्षा में मूँगफली के छिलके किसने फैलाए हैं?'' किसी विद्यार्थी ने कोई जवाब नहीं दिया। शिक्षक ने दोबारा वही प्रश्न कठोरता से किया, किन्तु फिर भी किसी छात्र ने कोई उत्तर नहीं दिया। अब की बार शिक्षक ने हाथ में बेंत लेकर कहा, ''अगर सच–सच नहीं बताया तो सबको मार पड़ेगी।'' वे एक छात्र के पास पहुँचे और उससे बोले, '' मूँगफली के छिलके किसने फेंके हैं?''

''जी, मुझे नहीं मालूम'', छात्र ने उत्तर दिया।

'सटाक्, सटाक्', दो बेंत उसके हाथ में पड़े। छात्र तिलमिलाकर रह गया। शिक्षक दूसरे, तीसरे, चौथे छात्र के पास पहुँचे। सभी से वही प्रश्न किया, सभी का उत्तर था– ''मुझे नहीं मालूम।'' सबके हाथों पर 'सटाक्, सटाक्' की आवाज हुई।

अब शिक्षक पाँचवें छात्र के पास पहुँचे। उससे भी वही प्रश्न किया। छात्र ने उत्तर दिया, ''श्रीमान् जी! न मैंने मूँगफली खाई, न छिलके फेंके। मैं दूसरों की चुगली नहीं करता, इसलिए नाम भी नहीं बताऊँगा। मैंने कोई अपराध नहीं किया है, इसलिए मैं मार भी नहीं खाऊँगा।''

शिक्षक छात्र को लेकर प्रधानाध्यापक के पास पहुँचे। प्रधानाध्यापक ने सारी बात सुनकर बालक को विद्यालय से निकाल दिया। बालक ने घर जाकर पूरी घटना अपने पिता जी को कह सुनाई। दूसरे दिन पिता जी बालक को लेकर विद्यालय में पहुँचे। तेजस्वी पिता ने प्रधानाध्यापक से कहा, ''मेरा पुत्र असत्य नहीं बोलता। वह घर के अतिरिक्त बाजार की कोई चीज भी नहीं खाता। उसका आचरण बहुत संयमित है। मैं अपने पुत्र को आपके विद्यालय से निकाल सकता हूँ किन्तु निरपराध होने पर उसे दंडित होते नहीं देख सकता।'' प्रधानाध्यापक शांत हो गए।

यही बालक आगे चलकर लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने नारा दिया था– ''स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर ही रहूँगा।''

शब्दार्थ

आश्रयदाता – आश्रय देनेवाला आँखें तरेरना – गुस्सा होना

सन्न रह जाना – आश्चर्य से मूर्ति के समान हो जाना

नियत – पहले से तय

तेजस्वी – ..... निरीक्षण – .....

कोर्निश – झुककर सलाम करना

ऊपर लिखे शब्दों में कुछ शब्दों के अर्थ नहीं दिए गए हैं। उन शब्दों के अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर शब्दों के सामने लिखो।

(जाँच करना, तेजयुक्त)

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो–

1. शाहजी कहाँ जाने की तैयारी कर रहे थे ?
2. बालक मोहन ने कौन–सा शब्द गलत लिखा था?
3. निडर बालक शिवा की बात सुनकर पिता पर क्या प्रभाव पड़ा होगा?
4. कक्षा के पाँचवें छात्र ने जवाब में क्या कहा?
5. तेजस्वी पिता ने प्रधानाध्यापक से अपने पुत्र के संबंध में क्या कहा?

प्रश्न 2. किसने, किससे, कब कहा?

क. ''तुझे भी मेरे साथ दरबार में चलना है।''

ख. ''मेरा पुत्र असत्य नहीं बोलता।''

ग. ''हुजूर! यह अभी बच्चा है।''

घ. ''मैं दूसरों की चुगली नहीं करता।''

सोचो और लिखो–

प्रश्न 3. क. शिवाजी अपने पिता का सम्मान करते थे पर उन्होंने दरबार में अपने पिता का आदेश नहीं माना। उन्होंने ऐसा क्यों किया?

ख. बालक मोहन ने अध्यापक का इशारा पाकर भी नकल नहीं की। यदि तुम मोहन की जगह पर होते तो क्या करते?

भाषातत्व और व्याकरण

प्रश्न 1. नीचे लिखे शब्दों और मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करो–

कोर्निश करना, तिलमिलाना, आँखें तरेरना, सन्न रह जाना।

समझो

- 'दाता' शब्द का अर्थ है 'देनेवाला'।

प्रश्न 2. दिए गए शब्द–समूहों के लिए 'दाता' शब्द का प्रयोग करते हुए शब्द लिखो जैसे– दान देने वाला = दानदाता।

आश्रय देनेवाला, अन्न देनेवाला, जन्म देनेवाला, कर देनेवाला, शरण देनेवाला।

प्रश्न 3. निम्नलिखित अवतरण में जहाँ–जहाँ अशुद्धियाँ हों, उन्हें शुद्ध कर अवतरण पुनः लिखो।

राजेन्द्र परसाद अपने गाँव जीरादेई जा रहा था। नोका मैं एक मूसाफीर ने सीगरेट सूलगाई। उसके धूएँ से राजेन्द्र बाबू को खँसी उभर आई। जब सीगरेट का गंध–असहय हो गया राजेन्दर बाबु ने उस मूसाफीर से पूछा, ''यह सीगरेट आपका ही है न?'' जवाब मीला, ''मेरी नहीं तो क्या आपकी है। राजेन्दर बाबु बोले, ''तो यह धूँआ आपका ही होगा। इसे आप अपने पास ही रखिए।''

प्रश्न 4. इन उदाहरणों के समान पर, की, में, ने और को का प्रयोग करते हुए एक–एक वाक्य बनाओ।

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्दों में से स्त्रीलिंग और पुल्लिंग शब्दों को अलग–अलग छाँटकर लिखो।

शीशी, मेंढक, इलायची, युवक, मोटी, बूढ़ा, मुहल्ला, घास।

रचना

क तुमने अपने माता–पिता से व्यवहार की कौन–सी अच्छी बातें सीखी हैं ? कोई पाँच बातें लिखो।

ख घर के समान ही विद्यालय की स्वच्छता का ध्यान रखने के लिए क्या–क्या करना चाहिए?

गतिविधि

- हमारे देश के महापुरुषों ने हमें अनेक प्रेरक नारे दिए हैं। ऐसे पाँच महापुरुषों के नाम और उनके दिए नारे लिखो व उन्हें अपनी कक्षा की दीवारों पर लगाओ।
- **नीचे लिखे अवतरण को पढ़ो और इसका सारांश अपने शब्दों में लिखो।**

  एक बार महाराज रणजीत सिंह कहीं जा रहे थे कि सामने से एक पत्थर आकर उन्हें लगी। सिपाहियों ने चारों ओर नजर दौड़ाई तो एक बुढ़िया दिखाई दी। उसे गिरफ्तार करके महाराज के सामने हाजिर किया गया।

  बुढ़िया महाराज को देखते ही डर से काँप उठी। बोली, ''सरकार! मेरा बच्चा कल से भूखा था। घर में खाने को कुछ न था। पेड़ पर पत्थर मार रही थी कि कुछ बेर तोड़कर उसे खिलाऊँ किन्तु वह पत्थर भूल से आपको आ लगा। मैं बेगुनाह हूँ। सरकार! मुझे क्षमा किया जाए।" महाराज ने कुछ देर सोचा और वे बोले, ''बुढ़िया को एक हजार रुपये देकर सम्मान सहित छोड़ दिया जाए।''

  यह सुन सारे कर्मचारी अचंभित रह गए। एक ने सरकार से पूछ ही लिया, ''महाराज! जिसे दंड दिया जाना चाहिए, उसे रुपये दिए जाएँगे?'' रणजीत सिंह बोले, ''यदि निर्जीव वृक्ष पत्थर लगने पर मीठा फल देता है तो रणजीत सिंह उसे खाली हाथ कैसे लौटा दे?''

योग्यता–विस्तार

- तुम महापुरुषों के बारे में जानकारी एकत्रित करो जिनके कार्यों से तुम अधिक प्रभावित या प्रेरित हो।
- किसी भी महापुरुष के बारे में निम्न बिन्दुओं पर जानकारी एकत्रित कर लिखो–

  1. महापुरुष का नाम
  2. जन्म स्थान
  3. शिक्षा
  4. व्यवसाय
  5. उल्लेखनीय कार्य।
- क्या कभी तुम्हारे साथ ऐसा हुआ है कि तुम्हारे गलती की सजा तुम्हें मिली हो।
- महापुरुषों को उनके कार्यों के कारण जाना जाता है तुमको भी सभी लोग जाने इसके लिए तुम क्या–क्या करोगे अपने शब्दों में लिखो।
- नकल करना किसे कहते हैं ? क्या नकल करना अच्छा होता है।

5NCZME